R1-19-20

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU

Peer Reviewed Journal

ISSN 2319-8648

Impact Factor (SJIF)

Impact Factor - 7.139

Current Global Reviewer

International Peer Reviewed Refereed Research Journal Registered & Recognized
Higher Education For All Subjects & All Languages

Special Issue 20 Vol. I
on

भारतीय समाज और विकलांग (दिव्यांग) विमर्श

Indian Society & Ideology of Disability

October 2019

Associate Editor
Dr. Shivaji Waghmare

Guest Editor
Principal Dr. V.D. Satpute

Assistant Editor
Dr. V.B. Kulkarni
Dr. A.K. Jadhav
Dr. S.A. Tengse

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU, Dist. Parbhani

www.publishjournal.co.in

Scanned with OKEN Scanner

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Peer Reviewed

Impact Factor – 7.139 ISSN – 2348-7143

Current Global Reviewer

Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal

PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

October 2019 Special Issue- 20 Vol. I

भारतीय समाज और विकलांग (दिव्यांग) विमर्श

Indian Society & Ideology of Disability

Chief Editor
Mr. Arun B. Godam

Associate Editor
Dr. S.A. Wadchkar

Guest Editor
Dr. Vasant Satpute

Assistant Editor
Dr. V.B. Kulkarni
Dr. A.K. Jadhav
Dr. S.A. Tengse

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU, Dist. Par.

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue XX , Vol. I | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
October 2019 | SJIF | Impact Factor : 7.139

161

35. "भारतीय साहित्य में चित्रित विश्व विख्यात विकलांग चरित्र"
कांबळे ज्योती शशिकांत 163

36. विकलांगता को वरदान समझना चाहिए
डॉ.गोविन्द पांडव 167

37. हिंदी कहानी साहित्य में विकलांग विमर्श
डॉ. रेणुका मोरे 169

38. हिंदी कहानियों में विकलांग विमर्श
डॉ. अर्चना पत्की 173

39. "भारतीय समाज एवं विकलांग विमर्श"
सुरेखा कचरू थोरात 176

40. विकलांग चरित्र और कथा साहित्य
किशोर श्रीमंत ओहोळ 179

41. 'खंजन नयन' और विकलांगता
डॉ. प्रकाश बन्सीधर खुळे 182

42. हिन्दी साहित्य एवं विकलांग विमर्श
प्रा.डॉ.शिवाजी वडचकर 186

43. विकलांग विमर्श (चिकित्साविज्ञान, मनोविज्ञान, समाजविज्ञान तथा साहित्य के संदर्भ में) विमर्श क्या है ?
डॉ. सतीश यादव 191

44. अपंगत्वावरील विजय स्टीफनहॉकिंग
प्रा.डॉ.आंधेळे बी.व्ही. 194

45. बालगीतों मे विकलांगो का वर्णन
शेख शकिला अल्ताफ हुसेन, 197

46. अपंगाकडे सकारात्मक दृष्टीकोनातून पाण्याची गरज
प्रा.डॉ. यु.टी. गायकवाड

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU, Dist. Parbhani

Scanned with OKEN Scanner

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU

CURRENT GLOBAL REVIEWER
Special Issue XX , Vol. I
October 2019
Peer Reviewed
SJIF
ISSN : 2319 - 8648
Impact Factor : 7.139

हिंदी कहानियों में विकलांग विमर्श

डॉ. अर्चना पत्की
हिंदी विभागाध्यक्षा, नूतन महाविद्यालय, सेलू जि. परभणी, (संलग्न स्वा.रा.ती.म.वि. नांदेड महाराष्ट्र)

भारतीय संविधान भारतीय नागरिकों के लिए समानता, स्वतंत्रता, न्याय व गरिमा सुनिश्चित करता है और स्पष्ट रूप से विकलांग व्यक्तियों समेत एक संयुक्त समाज बनाने पर जोर डालता है। विकलांगता से तात्पर्य, सामाजिक स्वास्थ्य संपूर्ण शारीरिक, मानसिक और सामाजिक कल्याण की स्थिति है, रोग या अशक्तता की अनुपस्थिति मात्र नहीं है। अर्थात विकलांगता व्यक्ति की वह दशा है जो क्षति एवं अक्षमता के कारण उत्पन्न शारीरिक एवं मानसिक क्रियाओं संबंधित भूमिकाओं को सामान्य व्यक्तियों की तुलना में कैसे में बाधक होती है। अतः विकलांगता का सामाजिक स्वरुप वातावरण को परिलक्षित करता है।

देश में विकलांगों की स्थिति किसी से छिपी नही है, न ही उनकी प्रतिभा पर संदेह किया जा सकता है। दोनों ही अपने नए कीर्तिमान गढ़ रहे हैं। सामान्य व्यक्तियों की तरह उनके जीवन-यापन और मूलभूत आवश्यकताओं संबंधी नीतियाँ विश्वस्तर पर बनती रहें, तो उनमें और हिम्मत और कुछ करने की ललक बढ़ेगी। मौजूदा समय में भारत राष्ट्रीय विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों तथा गरिमा की रक्षा करने की दृष्टि से जो प्रयास कर रहा है उसमें उन्हें सफलता प्राप्त हुई या नहीं यह बात अलग है। राष्ट्रीय स्तर पर जो प्रयास किया जा रहा है या राष्ट्रीय नीति मानती है कि "विकलांग व्यक्ति देश के लिए मूल्यवान मानव संसाधन होता है। तथा ऐसे व्यक्तियों को समाज अवसरों, उनके अधिकार की सुरक्षा तथा समाज में पूर्ण भागीदारी का प्रयास करती है।" यही राष्ट्रीय नीति का उद्देश्य है।

समाज हो या साहित्य में विकलांग मानवों की जीवनस्थिति और विकलांगता उत्पन करनेवाली परिस्थतियाँ आदि का संयोजन साहित्य, धर्म, पुराण आदि ग्रंथों में प्रारंभ से ही होता आया है। विकलांगता का संबंध मानव के शरीर और मन से जुड़ा हुआ है।

साहित्य में प्राचीन काल से ही विकलांग चरित्रों को चित्रित किया है, किंतु इस चरित्रों की ओर किसी का ध्यान नही गया। विकलांगता जन्मजात या दुर्घटना के कारण उत्पन्न होती है। आदिकाल से ही विकलांग व्यक्तियों ने समाज के लिए व्यापक योगदान दिया है। उनका योगदान इतना मूल्यवान था कि ये लोग वास्तव में विकलांग थे या नहीं। क्योंकि के इन्होंने विकलांगता पर मात कर अपनी मंजिल पाने में सफलता प्राप्त की है। विकलांगों ने अपने कार्य की सफलता से सब लोगों को भी प्रेरित किया है।

साहित्यकार अपनी प्रतिभा से एक सार्थक और सशक्त रचना तैयार करता है। वह रचना संपूर्ण जीवन को परिवर्तित करती है। जीवन की दिशा बदलना ही साहित्य का काम है। साहित्य में सामाजिक आकृति-विकृति, मानवीय दृष्टि सम्मेलित होती है। इस प्रकार साहित्य में विकलांगों की जीवन स्थिति, विकलांगता उत्पन्न करनेवाली परिस्थितियाँ आदि का निरुपन साहित्यिक ग्रंथ, धार्मिक ग्रंथ आदि में प्रारंभ से होता आ रहा है। लोगों की दृष्टि से अभिशाप मानी जानेवाली विकलांगता का संबंध मानव के शारीरिक और मानसिक संरचना के दोष से है। समाज ने आज किसी शारीरिक तथा मानसिक विकार से ग्रस्त वर्ग को ही विकलांग माना है।

प्रस्तुत आलेख में हिंदी कहानियों में किसी प्रकार का विकलांग विमर्श में चिंतन होता है इसकी आलोचना की है। हिंदी साहित्य में सामाजिक जागरुकता की दृष्टि से कहानियाँ लिखी गयी, इसमें शुरुआत प्रेमचंद युग की कहानियों से हम

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU, Dist. Parbhani

Scanned with OKEN Scanner

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue XX , Vol. I | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
October 2019 | SJIF | Impact Factor : 7.139

मान सकते है। परम्परागत रुप से चली आ रही कुरीतियाँ और रुढ़िवादी परम्परा के विरुध्द आंदोलन हुआ। इसमें समाज सुधारकों के योगदान को भूलाया नहीं जा सकता। उसी तरह साहित्यकारों के योगदान को भी भूलाया नहीं जा सकता, क्योंकि साहित्यकारों की दृष्टि न केवल सशक्त लोगों पर ही न थी, बल्कि विकलांग चरित्रों को भी साहित्य के माध्यम से चित्रित किया गया।

हिंदी कहानी परम्परा में प्रेमचंद पूर्व परंपरा पर यदि हम दृष्टि डाले तो इस युग में लिखी गयी कहानियाँ बहुत कम है। एक ओर खड़ीबोली हिंदी का साहित्यिक रुप स्थिर होता जा रहा था। तो दूसरी ओर कहानियाँ कल्पना और परिस्थितियों का समकालीन अभाव दिखानेवाली होने के कारण विकलांग चरित्रों पर किसी का ध्यान ही नहीं गया। और नही उनकी समस्याओं की ओर भी। अत: प्रेमचंद पूर्व युग की कहानियों में विकलांग चरित्र और समस्याएँ न के बराबर है।

हिंदी कहानी साहित्य का स्वर्ण युग यदि हम प्रेमचंद युग को कहे तो वह गलत न होता। क्योंकि इस युग की कहानियों का विशेष महत्त्व है। पहले और दूसरे विश्वयुध्द के बीच का यह समय गहरी उथल-पुथल का समय माना जाता है। जनता के जीवन में जड़ से परिवर्तनशीलता दिखाई देती है। देशभक्ति का भाव जागृत होने के कारण जनता में सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक चेतना का निर्माण हुआ। इन सभी की दृष्टि से यह युग परिवर्तनशील रहा है। मे. गांधी, स्वामी विवेकानंद जैसे जागरुक विचारों के कारण समाज की परिस्थितियाँ गति से परिवर्तित हुई। इस युग का गद्य साहित्य विकासशीलता की ओर भी झुका हुआ था। इसलिए इस युग का हिंदी साहित्य के इतिहास में काफी महत्त्व है। इस युग में कहानी कल्पना से हटकर यथार्थ से प्रभावित हुई है।

प्रेमचंद इस युग के प्रमुख कहानीकार रहे हैं। उनकी कहानियों में भारतीय जनता के जीवन के सभी पहलुओं को चित्रित किया गया है। भारतीय जीवन की सभी पहलुओं के साथ-साथ इनकी कहानियों में विकलांग चरित्रों को भी चित्रित किया गया है। 'पत्नी से पति' कहानी में अंकित विकलांग चरित्र भीख मांगकर पैसे कमाता है। कमाया हुआ पैसा वह स्वयं के लिए नहीं तो देश के लिए दान करता है। अत: विकलांग चरित्र देश प्रेम के लिए भीख मांगकर देश की सेवा करता है। विकलांग होते हुए भी प्रेमचंद ने सब लोगों के लिए पात्र प्रेरणादायी दर्शाया है। प्रसाद जी ने 'मधुआ' कहानी में व्यक्ति के हृदय को ठेस देनेवाली विकलांग चरित्र की पीड़ा को व्यक्त किया है। 'बेड़ी' कहानी में एक अंध पात्र का चित्रण है जो ९-१० साल के लड़के का लाठी के रुप में सहारा लेकर भीख माँगकर अपना जीवन-यापन करता है। प्रसाद जी की 'दुखिया' कहानी भी विकलांग चरित्र को प्रस्तुत करनेवाली है। कहानी में राम गुलाम नामक अंध चरित्र का चित्रण मिलता है। उसकी बेटी देखभाल करती है। अपने अंधे बाप का खयाल रखती है। उसे रोटी तक खिलाती है। शेषनाथ शर्मा की 'शील' कहानी में एक लुली पगली स्त्री का चरित्र अंकित है। प्रस्तुत कहानी का ठाकुर एक दिन उसकी इज्जत की होली करता है। तब वह उसका प्रतिशोध लेना चाहती है। प्रतिशोध के लिए उठे हाथ को ठाकुर ऐसे मरोड़ता है कि वह जिंदगी भर के लिए हाथ कंधे से उखड़कर झूलने लगता है। परंतु वह प्रतिशोध लेना नहीं चुकती। वह प्रतिशोध लेने में सफल हो जाती है। इस प्रकार प्रेमचंद युगीन कहानी साहित्य में विकलांग विमर्श को लकर कम मात्रा में भले ही कहानियाँ लिखी गयी हो, किंतु इस कहानीकारों ने विकलांगों की आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक, समस्याओं को उजागर किया है। साथ ही बिकलांग चरित्रों के प्रति कहानीकारों ने दया, करुणा, स्नेह, सेवाभाव, सहानुभूति को चित्रित कर पाठकों को प्रेरित भी किया है।

प्रेमचंद युग के पश्चात हिंदी कहानी साहित्य में प्रेमचंदोत्तर युग का बहुत महत्त्व है, क्योंकि साहित्य की दृष्टि से यह विकास का काल है। इस युग के कहानीकारों ने सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक आदि विषयों पर कहानीयाँ लिखते हुए मनुष्य जीवन से संबंधित सभी समस्याओं पर अपना लक्ष्य केंद्रित किया है। सभी दृष्टि से यह काल परिवर्तनशील

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU, Dist. Parbhani

Scanned with OKEN Scanner

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU

(26)

CURRENT GLOBAL REVIEWER
Special Issue XX, Vol. I
December 2019
Peer Reviewed
SJIF
ISSN : 2319 - 8648
Impact Factor : 7.139

रहा है। द्वितीय विश्वयुद्ध और बंगाल का आकाल आदि घटनाओं ने कहानीकारों को प्रभावित कर उनमें राष्ट्रीय चेतना को जागृत किया। भावनात्मकता, व्यक्तिगत वेदना, निराशा आदि का भी चित्रण इस युग के साहित्यकारों के साहित्य में हुआ। साहित्यकारों की जागरूकता का परिचय इस युग मे मिलता है। इस युग के कहानीकारों की कहानियों में विभिन्न प्रकार के चरित्र प्रस्तुत हुए है। मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया गया है। इस युग में अनेक कहानिकारों ने विकलांग विमर्श को लेकर कहानियाँ लिखी। इलाचंद्र जोशी की कहानी 'पागल की सफाई', 'अनाश्रित', 'क्रय-विक्रय' आदि कहानियों में मनोविकृति और मानसिक विक्षिप्तता का चित्रण हुआ है। इनकी कहानियों के चरित्र मानसिक रुप से विकलांग है। जो अत्यंत सूक्ष्मता से व्यक्त हुए है। जैनेंद्र कुमार की कहानी 'अंधे की भेद' में सामाजिक विकृति का चित्रण है। यशपाल जी की कहानी 'अभिशप्त' में भी विकलांग विमर्श देखने को मिलता है। इस कहानी में यशपाल जी ने एक बालक का चित्रण करते हुए उसे विकलांग वर्ग का प्रतिनिधित्व करनेवाला दर्शाया है। बालक को अत्यंत प्रभावी रुप से चित्रित किया है। रांगेय राघव की कहानी 'गूंगे' में किशोर के चरित्र का व्यक्तित्व प्रस्तुत करते हुए, वह मूक भावना से सभी अत्याचारों को सहता भी है किंतु कभी-कभी इस अत्याचार का विरोध भी करता है। इस कहानी में रांगेय राघव जी ने विकलांगों के प्रति समाज की संवेदनाहीनता को चित्रित कर कहानी के माध्यम से सामान्य व्यक्ति का विकलांगो के प्रति व्यवहार भी चित्रित किया है। महादेवी वर्मा की संस्मरणात्मक कहानी 'अलोपी' मे भी नेत्रहीन अलोपी का जीवन चरित्र अंकित है। इस कहानी के दोनों पात्र अलोपी व अपाहिज रघु विकलांग होते हुए भी मेहनती है। इस कहानी के माध्यम से महादेवी वर्मा ने विकलांगों की मेहनत, आत्मविश्वास एवं अदम्य साहस को चित्रित किया है। वर्मा जी की कहानी 'गूँगिया' में एक गूंगी स्त्री के चरित्र को प्रस्तुत किया है। अज्ञेय जी की कहानी 'खितिनबाबू' कहानी में पैर से विकलांग व्यक्ति का चित्रण किया है। उसी प्रकार उनकी 'हरसिंगार', 'मेजर साहब की वापसी' कहानी में भी विकलांग विमर्श को चित्रित किया है। 'हर सिंगार' कहानी में विकलांग चरित्र सूरदास हारमोनियम बजाकर, भजन गाकर अपना जीवन-यापन करता है। 'मेजर साहब की वापसी' मे युध्द में आहत व्यक्ति की मनोव्यथा का चित्रण हुआ है। अज्ञेय की 'चिड़िया घर' कहानी में कुँवर साहब जो वास्तव में वेश्या का पुत्र है, बार-बार कॉलेज में स्वयं को वेश्यापुत्र सुनने के कारण उसी मन पर बहुत बडा आघात होता है, पागल हो जाता है, कई दिनों तक उसे पागलपन के दौरे पड़ते हैं। विष्णु प्रभाकर की कहानी 'नेत्रहीन' में खेतिया नामक पात्र जो नेत्रहीन है। खेतिया की मेहनत और अभिजात्य वर्ग द्वारा उसकी की गई उपेक्षा को कहानी में प्रस्तुति हुई है। इस चरित्र के संदर्भ में डॉ. नीलमणि दुबे का यह वक्तव्य, 'नेत्रहीन' का अंधा कथा नायक 'खेतिया' कुली के श्रमसाध्य कार्य से लेकर झाड़ू-पोछा, पानी भरने, पूजा करने तक के सब काम स्वयं करता है। इस प्रकार अपनी विकलांगता के बावजूद भी आत्माभिमान से जीवन बसर करनेवाला यह चरित्र प्रेरक जान पडता है।"

इस प्रकार प्रेमचंदोत्तर हिंदी कहानी साहित्य में भी शारीरिक और मानसिक रुप से विकलांग विमर्श को साहित्यकारों ने दर्शाया है। शारीरिक और मानसिक रुप से विकलांग चरित्र और उनकी सामाजिक, पारिवारिक, शैक्षिक और विभिन्न प्रकार की समस्याएँ देखने को मिलती है। उन चरित्रों की होनेवाली उपेक्षा की ओर पाठक का ध्यान गये बिना नही रहता। अतः इस युग की लिखी गयी कुछ कहानियों में विकलांग विमर्श को अत्यंत बखुबी से प्रस्तुत करने में कहानीकार सफल हो चुके है।

हिंदी कहानी साहित्य में विकलांग चरित्रों का अध्ययन करते समय कहानीकारों ने विकलांगों की समस्याओं को उजागर किया है। उनकी समस्याओं का अत्यंत सूक्ष्मता से अध्ययन कर पाठकों की ओर अपना ध्यान आकर्षित किया है। कम अधिक मात्रा में विकलांग चरित्र को केंद्र में रखते हुए कहानियों का सर्जन किया है। अपनी चेतना तथा प्रतिभा से एक

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU, Dist. Parbhani

Scanned with OKEN Scanner

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU

सार्थक प्रयास किया है। लोगों के दृष्टि से अभिशाप मानी जानेवाली विकलांगता का संबंध मानव के शारीरिक और मानसिक संरचना के दोष रहे है।

संदर्भ संकेत :

१. निशक्त चेतना : संपा. डॉ. विनय कुमार पाठक
२. विकलांग विमर्श- संपा. डॉ. विनय कुमार पाठक
३. विकलांगता - समस्या और समाधान - गीता अग्रवाल
४. विशेष शिक्षा एवं पुनर्वास - डॉ. जोसेफ
५. विकलांग विमर्श का वैश्विक परिदृश्य- संपा- सुरेश माहेश्वरी
६. कथा साहित्य में विकलांग विमर्श - संपा. डॉ. विनय कुमार पाठक

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU, Dist. Parbhani

Scanned with OKEN Scanner

SPECIAL ISSUE
January 2020

VIDYAWARTA®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

स्वयं वित्त पोषित,
एक दिवसिय राष्ट्रीय संगोष्ठी तिथि ४ जनवरी २०२०

संयोजक

श्री गजानन शिक्षण प्रसारक मंडल, येलदरी कैम्प द्वारा संचलित, (भाषिक मारवाडी अल्पसंख्यांक संस्था)

नूतन कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,

सेनगाव, ता.सेनगांव, जि.हिंगोली

संलग्न

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड

हिंदी साहित्य में कृषक चेतना

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU, Dist. Parbhani

प्रा.एस.जी.तळणीकर
प्र.प्रधानाचार्य

प्रा.प्रमोद घन
संगोष्ठी सचिव

डॉ.शंकर पजई
संगोष्ठी संयोजक

डॉ.विजय वाघ
संगोष्ठी सह संयोजक

Scanned with OKEN Scanner